राजा भभूत सिंह

चर्चा में क्यों?

मध्य प्रदेश सरकार ने **19वीं सदी के आदिवासी नेता राजा भभूत सिंह** को सम्मान देने के लिये **पचमढ़ी वन्यजीव अभयारण्य** का नाम **उनके नाम पर** रख दिया है।

मुख्य बिंदु

- **राजा भभूत सिंह के बारे में:**
  - **1857 के विद्रोह में योगदान:** राजा **भभूत सिंह** ब्रिटिश शासन के विरुद्ध **1857 के विद्रोह** के दौरान एक **प्रमुख कितु कम प्रसिद्ध आदिवासी नेता** थे।
  - **गुरिल्ला युद्ध के विशेषज्ञ:** उन्होंने **सतपुड़ा** के जंगलों और भू-भाग का गहन ज्ञान रखते हुए **प्रभावी गुरिल्ला हमले** किये तथा वर्षों तक **ब्रिटिश सेनाओं का प्रतिरोध** किया।
  - **तात्या टोपे के सहयोगी:** उन्होंने **तात्या टोपे** जैसे राष्ट्रीय नेताओं से **घनिष्ठ संबंध बनाए रखे** और **स्वतंत्रता आंदोलन को समर्थन** दिया।
  - **शहादत और विरासत:** अंग्रेज़ो ने उन्हें पकड़ने के लिये **मद्रास इन्फैंट्री** को तैनात किया और अंततः वर्ष **1860 में उनकी हत्या** कर दी। उनकी **विरासत** आज भी **कोरकू लोक परंपराओं** में जीवित है।
- **मध्य प्रदेश में सम्मानित अन्य जनजातीय नेता:**
  - **टंट्या भील:** वर्ष 2021 में **पातालपानी रेलवे स्टेशन** का नाम बदलकर **टंट्या भील** के नाम पर रखा गया।
  - **भीमा नायक: भील स्वतंत्रता सेनानी** **भीमा नायक** के सम्मान में **एक स्मारक की घोषणा** की गई है।
  - **भीमा नायक स्मारक:** नायक ने **1818–1850** के बीच **खानदेश में भील प्रतिरोध** का नेतृत्व किया।
  - **रानी कमलापति: भोपाल** स्थित **हबीबगंज रेलवे स्टेशन** का नाम बदलकर **गोंड रानी कमलापति** के नाम पर रखा गया। वह **गिन्नौर किले (वर्तमान सीहोर)** के शासक **निज़ाम शाह** की **सातवीं पत्नी** थीं।
  - **शंकर शाह और रघुनाथ शाह:** वर्ष 2021 में यह घोषणा की गई कि **छिंदवाड़ा विश्वविद्यालय** का नाम **गोंड राजघरानों** के नाम पर रखा जाएगा।
- **पचमढ़ी वन्यजीव अभयारण्य:**
- **परिचय:**
  - यह **दक्कन प्रायद्वीप जैवभौगोलिक क्षेत्र** में स्थित है तथा **मध्य भारत के जैविक प्रांत** के अंतर्गत आता है।
  - यह **सतपुड़ा पर्वत शृंखला** के मध्य में स्थित है, जो भारत में **पश्चिम से पूर्व** तक फैली हुई है।
  - इस रिज़र्व का सबसे ऊँचा स्थान **धूपगढ़** है, जो **समुद्र तल से 1,352 मीटर** ऊँचा है.
  - **रिज़र्व के भीतर संरक्षित क्षेत्र:**
- इस **बायोस्फीयर रिज़र्व** में तीन प्रमुख संरक्षित क्षेत्र शामिल हैं: **बोरी वन्यजीव अभयारण्य, सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान, पचमढ़ी अभयारण्य।**
- ये तीनों क्षेत्र मिलकर **सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व** का निर्माण करते हैं, जो **मध्य भारत के लिये एक महत्त्वपूर्ण संरक्षण परिदृश्य** है।

कोरकू जनजाति

- **परिचय:**
  - **कोरकू समुदाय** मुख्य रूप से **मध्य प्रदेश**, **छत्तीसगढ़** तथा **महाराष्ट्र** के **मेलघाट क्षेत्र** में निवास करता है।
  - परंपरागत रूप से, **कोरकू स्थायी कृषक** तथा **कुशल किसान** रहे हैं। वे अपने क्षेत्रों में **आलू** और **कॉफी** जैसी फसलें उगाने में **अग्रणी** थे।
  - हालाँकि आज अधिकांश कोरकू समुदाय के पास **पर्याप्त कृषि भूमि** है, लेकिन कुछ लोगों ने **19वीं सदी के अंत** तक **झूम खेती** से हटकर **वानिकी** तथा **खेतीहर मज़दूरी** की ओर रुख किया।
  - **कोरकू गाँव** आमतौर पर **घास और लकड़ी** से बनी **छोटी-छोटी झोपड़ियों** से बने होते हैं।
  - वे **वंशानुगत**, **पुरुष-वंश-आधारित समुदायों** में रहते हैं, जिनका नेतृत्व **परंपरागत मुखिया** करते हैं।
- **सांस्कृतिक प्रथाएँ और विश्वास:**
  - **कोरकू जनजाति** की एक **विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान** है तथा **परंपरागत चिकित्सा पद्धतियाँ** आज भी सक्रिय रूप से उपयोग में हैं।
  - वे अपने **पूर्वजों को देवता** के रूप में पूजते हैं तथा उनकी स्मृति में **'मुंडा' नामक स्मारक स्तंभ** स्थापित करते हैं।

1857 का विद्रोह

ईस्ट इंडिया कंपनी (EIC) के खिलाफ संगठित प्रतिरोध की पहली अभिव्यक्ति
भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग के कार्यकाल (1856-62) के दौरान घटित

विद्रोह का केंद्र	नेता	ब्रिटिश अधिकारी (विद्रोह का दमन)
दिल्ली	बहादुर शाह ज़फर	जॉन निकोलसन
लखनऊ	बेगम हज़रत महल	हेनरी लॉरेंस
कानपुर	नाना साहेब	सर कॉलिन कैंपबेल
झाँसी और ग्वालियर	रानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे	जनरल ह्यूज रोज
बरेली	खान बहादुर खां	सर कॉलिन कैंपबेल
बिहार	कुंवर सिंह	विलियम टेलर
इलाहाबाद और बनारस	मौलवी लियाकत अली	कर्नल ओनसेल

विद्रोह की विफलता:

- सीमित विद्रोह - रियासतों तथा दक्षिणी प्रांतों ने इसमें भाग नहीं लिया
- प्रभावी नेतृत्व का न होना
- सीमित संसाधन - लोग/सिपाही/सैनिक, धन और शस्त्र
- अंग्रेज़ी- शिक्षित मध्यम वर्गों, संपन्न महाजनों, व्यापारियों और बंगाल के ज़मींदारों ने विद्रोह को दबाने में मदद की

परिणाम:

- भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हुआ
- भारत में ब्रिटिश ताज का प्रत्यक्ष शासन
- वायसराय ने गवर्नर जनरल का स्थान लिया
- व्यपगत के सिद्धांत की समाप्ति- दत्तक पुत्रों को कानूनी उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता दी गई
- ब्रिटिश अधिकारियों में भारतीय सैनिकों के अनुपात में वृद्धि हुई

विद्रोह के कारण:

- राजनीतिक - ब्रिटिश विस्तार नीति (व्यपगत का सिद्धांत)
- सेना - भारतीय सैनिकों के साथ हीन व्यवहार मुख्यतः उनके साथ जो किसान पृष्ठभूमि वाले थे,
- आर्थिक - किसानों पर अत्यधिक कर का आरोपण, राजस्व संग्रह के सख्त तरीके, ब्रिटिश वस्तुओं के आने से स्थानीय उद्योगों को क्षति
- सामाजिक-धार्मिक - पश्चिमी सभ्यता का तेज़ी से प्रसार, सती प्रथा और कन्या भ्रूण हत्या का उन्मूलन, पश्चिमी शिक्षा प्रणाली को लागू करना, भारतीयों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने संबंधी मान्यता
- तात्कालिक कारण - नई एनफील्ड राइफल्स के कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी लगाकर धार्मिक मान्यताओं का उल्लंघन करने की अफवाहें

1857 के विद्रोह पर लिखी गई पुस्तकें

- वीर सावरकर द्वारा लिखित 1857 का स्वातंत्र्य समर
- पूरन चंद जोशी द्वारा लिखित रिबेलियन, 1857: ए सिम्पोजियम
- जॉर्ज ब्रूस मैलेसन द्वारा लिखित हिस्ट्री ऑफ द इंडियन म्यूटिनी, 1857-1858
- क्रिस्टोफर हिब्बर्ट द्वारा लिखित द ग्रेट म्यूटिनी
- इकबाल हुसैन द्वारा लिखित रिलीजन एंड आइडियोलॉजी ऑफ द रिबेल्स ऑफ 1857
- खान मोहम्मद सादिक खान द्वारा लिखित एक्सकवेशन ऑफ ट्रूथ: अनसंग हीरोज़ ऑफ 1857 वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस

Drishti IAS

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/raja-bhabhut-singh